'क्लोर' अल्कली (कास्टिक सोडा, सोडा एश) नमक का सबसे बड़ा खरीदार

नमक न केवल खाने में उपयोग की जाने वाली महत्वपूर्ण खाद्य सामग्री है, बल्कि कई उद्योग में इसका कच्चे माल के रूप में उपयोग होता है। पिछले एक दशक में भारतीय नमक की गुणवत्ता में सुधार आने से इसकी उद्योग में खपत बढ़ी है। इससे नमक उद्योग को आधुनिक और विकास में बढ़ी सफलता मिली है। कास्टिक सोडा, सोडाऐश, साबुन व प्रक्षालक (डिटरजेन्ट) रसायन, जल मृदुकरण संयत्र, रंगाई आदि विभिन्न उद्योगों में नमक का व्यापक उपयोग किया जाता है।

क्लोर अल्कली उद्योग नमक का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। देश में विभिन्न उद्योगों द्वारा वर्ष 2012-13 के 114.38 लाख टन की तुलना में वर्ष 2013-14 में 110.05 लाख टन नमक का उपयोग किया गया। वर्ष 2012-13 के 86.26 लाख टन की तुलना में वर्ष 2013-14 में 85.14 लाख टन का उपभोग 'क्लोर' अल्कली उद्योगों (अर्थात कास्टिक सोडा व सोडा ऐश के उत्पादन के लिए) द्वारा किया गया।

नमक उद्योग से प्रतिप्राप्त प्रमुख उप-उत्पाद जिप्सम, ब्रोमीन, मैग्नीशियम क्लोराइड तथ मैग्नीशियम सल्फेट हैं। नमक से प्राप्त उप उत्पाद कई उद्योग में कच्चे माल के रूप में उपयोगी। जिप्सम का उपयोग सीमेंट उद्योग में होता है। जिप्सम आधुनिक भवन निर्माण में काफी उपयोगी है। मैग्नीशियम सल्फेट कई तरह के रसायनों का अवयव है। ब्रोमीन और मैग्नीशियम क्लोराइड भी एक रसायन के रूप में उपयोगी है। नमक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए नमक उत्पादकों में जागरूकता पैदा करने के निरन्तर प्रयास किये गये। क्लोर एल्कली उद्योग, निर्यात तथा खाद्य उद्योग की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कच्चे नमक की गुणवत्ता में सुधार हेतु नमक धोवन/परिष्करण संयत्र स्थापना बाबत नमक उत्पादकों को प्रोत्साहित किया गया। नमक आयुक्त कार्यालय ने निर्यात आयोडीन नमक सहित परिशोधित नमक उत्पादन के लिए 124.96 लाख टन वार्षिक उत्पादन क्षमता के 112 नमक धोवन/परिशोधन संयत्रों की स्थापना को प्रोन्नत भी किया।

डबल वाश छुआरे की बिक्री जोरों पर

दिल्ली। इस समय छुआरे में लिवाल और बिकवाल दोनों सीमित बने हुए हैं खपत का समय होने के कारण आगामी दिनों कीमत सुधार की ओर दिखाई दे रही है। इस समय लाल की कीमत 35/110 रुपये प्रति किलो और रंग कट के भाव 40/120 रुपये प्रति किलो पर बोले जा रहे हैं। बाजार में हलकी क्वालिटी के माल की आवक अधिक होने से कीमत में लम्बी तेजी के योग नहीं हैं। व्यापारिक सूत्रों के अनुसार पिछले काफी समय से डबल वास करा कर छुआरे की बिकवाली हो रही है। जिसमें खराब क्वालिटी का पता नहीं चल पाता। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

डबल वास वाले छुआरे की बिक्री जहां बढ़ती कीमत को ब्रेक लगा है। वहीं उपभोक्ता की सेहत से खिलवाड़ हो रही है। इसलिए कीमत में जल्द विशेष तेजी के आसार नहीं है। छुआरे को पैदावार